इकाई 4 गृहोपकरणानि, सम्बन्धवाचकशब्दावली, शरीरावयवनामावली, व्यवसायवाचकनामावली च

रूपरेखा

४.१ उद्देश्यानि (Objectives)

४.२ प्रस्तावना (Preface)

४.३ नामावलीनां वर्णनम् (नामों की सूची)

४.३.१ गृहोपकरणनामावली (घरेलू उपकरणों के नाम)

४.३.१.१ पूजासम्बद्धवस्तूनां नामानि (पूजा सम्बन्धी वस्तुओं के नाम)

४.३.१.२ खाद्यवस्तूनां नामानि (खाने की वस्तुओं के नाम)

४.३.१.३ अध्ययनसामग्रीणां नामानि (पढने की सामग्रियों के नाम)

४.३.१.४ वस्त्राणां नामानि (वस्त्रों के नाम)

४.३.१.५ अवशिष्टागमे गृहसम्बद्धवस्तूनि (घर की अन्य वस्तुओ के नाम)

४.३.२ सम्बन्धवाचकशब्दावली (सम्बन्ध बताने वाले शब्द)

४.३.३ शरीरावयवनामावली (शरीर के अवयवों के नाम)

४.३.४ व्यवसायवाचकनामावली (व्यवसाय सूचक नाम)

४.४ अभ्यासः (Practice)

४.४.१ मिश्राभ्यासः

४.५ सारांशः (Summary)

४.६ बोधप्रश्नानाम् उत्तराणि (Answers to the question)

४.७ सन्दर्भग्रन्थसूचिः (Bibliography)

४.८ सहायकोपयोगि पाठ्य सामग्री(Supportive study material)

४.१ उद्देश्यानि (Objectives)

- अनेन पाठेन छात्राः वस्तूनां संस्कृतनामानि ज्ञास्यन्ति। (इस पाठ से छात्र संस्कृत में वस्तुओं के नाम को जान सकेंगे।)
- छात्राः विशिष्य गृहोपकरणानां संस्कृतनामानि ज्ञास्यन्ति। (छात्र विशेष रूप से संस्कृत में गृहोपकरण के नाम को जान सकेंगे।)
- गृहोपकरणानां संस्कृतव्यवहारे प्रयोगं कर्तुं शक्ष्यन्ति। (गृहोपकरण का संस्कृत में व्यवहार करने का सामर्थ्य प्राप्त कर सकेंगे।)
- छात्राः सम्बन्धवाचकशब्दानां संस्कृतभाषायां संज्ञानं प्राप्स्यन्ति। (छात्र सम्बन्धवाचक शब्दों का संस्कृत भाषा में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।)
- सम्बन्धवाचकशब्दानां संस्कृते प्रयोगसामर्थ्यं सम्प्राप्स्यन्ति। (सम्बन्धवाचक शब्दों का संस्कृत में प्रयोग का सामर्थ्य छात्र प्राप्त कर सकेंगे।)

- छात्राः शरीरावयवानां संस्कृतनामानि ज्ञातुं शक्ष्यन्ति। (छात्र शरीरावयवों का संस्कृत में नाम जान सकेंगे।)
- शरीरावयवानां संस्कृतव्यवहारे सरलतया प्रयोगसामर्थ्यं प्राप्स्यन्ति। (शरीरावयवों के संस्कृत व्यवहार में सरलता से प्रयोग करने में सामर्थ्य प्राप्त करेंगे।)
- छात्राः पाठेनानेन व्यवसायवाचकनामावलीं ज्ञास्यन्ति। (छात्र इस पाठ से व्यवसायवाचक शब्दों को समझ सकेंगे।)
- व्यवसायवाचकानां शब्दानां संस्कृतव्यवहारे छात्रैः प्रयोगः कर्तुं शक्ष्यते। (व्यवसायवाचक शब्दों को संस्कृत व्यवहार में प्रयोग करने में छात्र समर्थ होंगे।)
- एनं पाठम् अधीत्य छात्राः सरलसंस्कृतव्यवहारे दक्षाः भविष्यन्ति। (इस पाठ को पढ़कर छात्र सरल संस्कृत में व्यवहार करने में समर्थ होंगे।)

४.२ प्रस्तावना (Preface)

भाषाव्यवहाराय तस्याः शब्दराशिः परिज्ञेयः भवति। शब्दसम्पदः अभावे कश्चनापि भाषाव्यवहारं कर्तुं न प्रभवति। अतः भाषा भाषणीया चेत् शब्दकोषः महत्त्वपूर्णां भूमिकाम् आवहति। संस्कृतभाषायाः यदा चर्चा क्रियते तदा सर्वैरपि एकस्वरेणाङ्गीक्रियते प्राचीनतमा इयं भाषा। यदा भाषा प्राचीनतमा भवति तदा तस्य शब्दराशिः अपि प्राचीनः भवति। अस्माभिः ज्ञायते यत् परिवर्तनं हि प्रकृतेः नियमः। प्रकृतिः क्षणे क्षणे नवतां समुपैति। अत: कमपि नवीनं कालं वक्तुं नूतनं वा समयं समुपवर्णयितुं पुरातनीयं भाषा न शक्ष्यति इत्येवं कश्चन यदि आक्षिपति तर्हि तदयुक्तमेव भाति। यतः संस्कृतस्य इदं महदेकं वैशिष्ट्यं शब्दरचनायाः। अतः संस्कृतस्य पार्श्वे सर्वतो विशाला शब्दसम्पत्तिः वर्तते। शब्दसंरचनायाः सर्वोत्तमसामर्थ्यमपि विद्यते। अयमेव हेतुः वर्तते अस्याः आधुनिकव्यवहारस्याऽपि।

(भाषा व्यवहार के लिए भाषा की शब्द सम्पत्ति को समझना बहुत आवश्यक होता है। शब्द सम्पत्ति के अभाव में कोई भी भाषा व्यवहार नहीं कर सकता इसलिए भाषा में व्यवहार करना है तो शब्दकोष की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। संस्कृत भाषा की जब चर्चा करते है तब सबके मन में एक विचार आता है कि यह प्राचीन भाषा है। जब यह प्राचीन भाषा है तब इसकी शब्द सम्पत्ति भी प्राचीन है। हम जानते हैं कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। प्रकृति प्रत्येक क्षण परिवर्तित होती है। कुछ लोग कहते हैं कि नूतन काल को यह भाषा उपवर्णित करने में समर्थ नहीं है, तो ऐसा कहना ठीक नहीं है क्योंकि संस्कृत का महत्व, पूर्णवैशिष्ट्य उसकी शब्द रचना है। अतः संस्कृत के पास में सबसे विशाल शब्द सम्पत्ति है। शब्द संरचना का सर्वोत्तम सामर्थ्य भी इसमें विद्यमान है। इसी हेतु से आधुनिक व्यवहार करने में भी यह भाषा समर्थ है।)

संस्कृतव्यवहाराय निम्नांशाः अनिवार्याः भवन्ति –

(संस्कृत भाषा के व्यवहार के लिए निम्नांश अनिवार्य तत्व हैं –)

(i) सरलता

(ii) सहजता

(iii) प्रवाहमयतया

(iv) प्रभावपूर्णता

(v) संकोचाभावः च (संकोच का अभाव)

एते सर्वेऽपि अंशाः शब्दकोषाधीनाः। यस्य कोषः यावान् समृद्धः। सः तावदुत्तमरीत्या व्यवहर्तुं शक्नोति। अतः छात्रेषु भाषाव्यवहारस्य सामर्थ्यं समुत्पादयितुम् अस्मिन् पाठे शब्दकोषस्य चर्चा विहिता। शब्दकोषस्य परिज्ञानानन्तरं कश्चनापि सरलतया, सहजतया, प्रवाहेण, प्रभावपूर्णरीत्या संकोचं विना भाषाव्यवहारं कर्तुं शक्नोति। तस्मात् पाठमेनमधीत्य संस्कृतव्यवहारजिज्ञासवः नूनमेव लाभान्विताः भविष्यन्ति । शब्दकोषचर्चाप्रसङ्गे पाठेऽस्मिन् गृहोपकरणनामावली, सम्बन्धवाचकशब्दावली, शरीरावयवनामावली, व्यवसायवाचकनामावली च चर्चिता विद्यते। एतेषाम् अंशानां परिज्ञानेन सामान्यः संस्कृतव्यवहारः उत्तमरीत्या छात्रैः सम्पादयितुं शक्यते।

(ये सभी अंश शब्दकोष के अधीन है। जिसका कोष जितना समृद्ध होता है। वह उतनी ही उत्तम रीति से व्यवहार करने में समर्थ होता है। इसलिए छात्रों में भाषा व्यवहार के सामर्थ्य का समुत्पादन इस पाठ के माध्यम से चर्चा करके कैसे शब्दकोष की व्यापकता हो। शब्दकोष का परिज्ञान होने पर किस तरह छात्र सरलता, सहजता, प्रवाह और प्रभावपूर्ण रीति से संकोच के बिना भाषा व्यवहार कर सकते हैं। इसलिए संस्कृत को जानने के इच्छुक संस्कृत व्यवहार करने के इच्छुक अवश्य इस पाठ से लाभान्वित होंगे। शब्दकोष चर्चा के प्रसंग में इस पाठ में गृहोपकरण नामावली, सम्बन्धवाचक शब्दावली, शरीरावयव नामावली, और व्यवसायवाचक नामावली पर चर्चा की गयी है। इन अंशों के परिज्ञान से सामान्य संस्कृत व्यवहार उत्तम रीति से छात्र करने में समर्थ हो सकते हैं।)

४.३ नामावलीनां वर्णनम् (नामावलियों का वर्णन)

४.३.१ गृहोपकरणनामावली (घरेलू उपकरणों के नाम)

४.३.१.१ पूजासम्बद्धवस्तूनां नामानि (पूजा सम्बद्ध वस्तुओं के नाम)

अत्र अनेकानि वस्तूनि अन्तर्भूतानि भवन्ति, यानि अस्माभिः दैनिकव्यवहारे बाहुल्येन उपयुज्यन्ते। (यहाँ पूजा सम्बद्ध अनेक वस्तुओं का अन्तर्भाव होता है, जिनको हम पूजा के समय दैनिक व्यवहार में उपयोग करते हैं।)

1. मन्दिरम् – मन्दिर
2. गन्धवर्तिका – अगरबत्ती
3. अग्निपेटिका – माचिस
4. अग्निशलाका – माचिस
5. शिक्थवर्तिका – मोमबत्ती
6. तिलकम् – तिलक
7. आसनम् – आसन
8. प्रतिमा – मूर्ति
9. दीपः – दीपक
10. पुष्पाणि – फूल
11. घण्टिका – घण्टी
12. शङ्खम् - शङ्ख
13. पञ्चपात्रम् – पञ्चपात्र
14. रक्षासूत्रम् – कलावा
15. नैवेद्यम् – भोग
16. पवित्री – पवित्री
17. रोली - श्री

एतेषां संस्कृतनाम्नां व्यवहारेण वयं संस्कृतेन आत्मनो दक्षान् कर्तुं प्रभवामः।

(इनके संस्कृत नाम व्यवहार से हम संस्कृत में अपने आप को दक्ष कर सकते हैं।)

एतानि वाक्यानि पठित्वा अन्यशब्दान् योजयित्वा वाक्यानि लिखत।

(इन वाक्यों को पढ़कर अन्य शब्दों को मिलाकर वाक्यों का निर्माण भी कर सकते हैं।)

क. मन्दिरं गत्वा देवान् पश्यामः। (मन्दिर में जाकर देवताओं को देखता हूँ।)

ख. सः श्रियं धृत्वा सुन्दरः दृश्यते। (वह चन्दन लगाकर सुन्दर दिखाई देता है।)

ग. आसने उपविश्य सर्वे देवं सेवन्ते। (आसन पर बैठकर सभी देवों की पूजा करते हैं।)

घ. पुष्पाणि समर्प्य माता देवान् तोषयति। (पुष्पों को अर्पित कर माता देवों की पूजा करती है।)

बोधप्रश्नाः १

१. अधोलिखितशब्दान् उपयुज्य वाक्यानि रचयत ? (अधोलिखित शब्दों को जोड़कर वाक्यों को लिखें।)

   1. मन्दिरम् 2. तिलकम् 3. दीपः 4. घण्टिका 5. पुष्पाणि

२. एतेषां शब्दानां हिन्दीं लिखत। (इन शब्दों को हिन्दी में लिखें।)

   1. आसनम् 2. नैवेद्यम् 3. अग्निपेटिका 4. गन्धवर्तिका

३. एतेषां शब्दानां संस्कृतं लिखत। (इन शब्दों की संस्कृत लिखें।)

   1. कलावा 2. फूल 3. रोली 4. माचिस

४.३.१.२ खाद्यवस्तूनां नामानि (खाद्य वस्तुओं के नाम)

भोजनकाले सामान्यरूपेण संस्कृतेन व्यवहारं कर्तुं यदा वयं प्रवृत्ताः भवामः तदा अस्माकं खाद्यवस्तूनां संस्कृतनाम्नां ज्ञानं सुतराम् अपेक्षितं भवति । तदर्थम् अत्र अस्माभिः खाद्यवस्तूनां सूची संस्कृतेन हिन्द्यां वा समुपलिख्यते येन सहजतया छात्राः संस्कृतेन व्यवहारे दाक्ष्यं लब्धुं शक्नुयुः।

(भोजनकाल में सामान्य रूप से संस्कृत व्यवहार को जब हम करने के लिए प्रवृत्त होते हैं, तब हमें खाद्य वस्तुओं के संस्कृत नाम का ज्ञान बहुत ही अपेक्षित होता है, इसलिए यहाँ पर हम खाद्य वस्तुओं की सूची संस्कृत हिन्दी में लिख रहे हैं, जिससे सहजता से छात्र संस्कृत व्यवहार में दक्षता को प्राप्त कर सकते हैं।)

1. रोटिका – रोटी	2. शाकम् – भाजी
3. ओदनम् – भात	4. सूपः – दाल
5. अवलेहः – अचार	6. उपसेचनम् – चटनी
7. तेमनम् – कढ़ी	8. तक्रम् – छाछ
9. दधि – दही	10. दुग्धम् – दूध
11. घृतम् – घी	12. मधुरम् – मिठाई
13. पयोहिमम् - आईस्क्रीम	14. शतपुष्पा – सौंफ

15. एला – इलायची
16. ताम्बूलम् – पान
17. पूगीफलम् – सुपारी
18. लवङ्गगम् – लौंग
19. इक्षवः – गन्ना
20. पलाण्डुः – प्याज
21. पृथुकः – पोहा
22. शर्करा – शक्कर
23. तैलम् – तेल
24. सुपिष्टकम् - बिस्किट
25. मरीचिका – मिर्ची
26. कलायः – मूँगफली

एतेषां वस्तूनां नाम्नां प्रयोगपूर्वकं विविधानि वाक्यानि अपि रचयितुं शक्यानि तानि यथा – (इन वस्तुओं के नाम के प्रयोग से छात्र विविध वाक्यों की रचना कर सकते हैं। जैसे -)

- सुरेशः रोटिकां शाकं च खादति। (सुरेश रोटी और सब्जी खाता है।)
- रमेशः अन्नं न्यूनं खादति। (रमेश अन्न कम खाता है।)
- माता सूपं पुत्राय पचति। (माता दाल पुत्र के लिए बनाती है।)
- मह्यं तेमनं बहु रोचते। (मुझे कढ़ी अच्छी लगती है।)

एवं प्रयोगपूर्वकम् अधुना बहूनि वाक्यानि रचयितुं शक्यानि। उदाहरणरूपेण प्रश्नाः क्रियन्ते – (इस प्रकार छात्र बहुत सारे वाक्यों की रचना कर सकते हैं। उदाहरण रूप से कुछ प्रश्न कर रहे हैं)

1. भवान् किं खादति ? (आप क्या खाते हैं ?)
2. माता पाकशालायां किं निर्माति ? (माता पाकशाला में क्या बनाती है ?)
    1. एतेषां शब्दानां संस्कृतेन नाम लिखत। (निम्न शब्दों को संस्कृत में लिखें।)

       1. सुपारी 2. गन्ना 3. शक्कर 4. आइस्क्रीम
    2. अधोलिखितसंस्कृतशब्दानां हिन्दीं लिखत। (अधोलिखित संस्कृत शब्दों को हिन्दी में लिखें।)

       1. घृतम् 2. मधुरम् 3. पयोहिमम् 4. एला
3. अधोलिखितशब्दान् उपयुज्य वाक्यानि सरलसंस्कृतेन लिखत।
   (अधोलिखित शब्दों का उपयोग करके वाक्यों को सरल संस्कृत में लिखें।)

   1. मधुरम् 2. सूपः 3. तेवनम् 4. दधि

   1. ....
   2. ....
   3. ....
   4. ....
4. हिन्दीं संस्कृतेन सह सुष्ठुतया योजयत। (हिन्दी को संस्कृत के साथ योजित करें।)

क.	पलाण्डुः	1.	मिर्च
ख.	मरीचिका	2.	मूँगफली
ग.	तक्रम्	3.	प्याज

घ. पिष्टकम् 4. छाछ

ङ. कलायः 5. बिस्किट

एतानि वाक्यानि पठित्वा अन्यशब्दान् योजयित्वा वाक्यानि रचयत।

(इन वाक्यों को पढ़कर अन्य शब्दों को जोड़कर वाक्यों की रचना करें।)

क. ताम्बूलेन सह एलां खादति।
(पान के साथ इलायची खाता है।)

ख. तेवनं तस्मै रोचते।
(उसे कढ़ी अच्छी लगती है।)

ग. पलाण्डुं सः न खादति।
(प्याज वह नहीं खाता है।)

घ. सः मधुरं खादति।
(वह मीठा खाता है।)

ङ. तक्रं देवाः पिबन्ति।
(मट्ठा देवता पीते हैं।)

च. सूपेन रोटिकां खादति।
(दाल से रोटी खाता है।)

छ. बालः दुग्धं पिबति।
(बालक दूध पीता है।)

ज. घृतेन रोटिका सम्यक् खाद्यते।
(घी से रोटी अच्छे से खायी जाती है ।)

झ. माता अन्नं पचति।
(माता अन्न पकाती है।)

ञ. भवान् पिष्टकं खादति।
(आप बिस्कुट खाते हो।)

बोधप्रश्नाः २

१. अधोलिखितशब्दान् योजयित्वा वाक्यानि लिखत। (अधोलिखित शब्दों को जोड़कर वाक्य लिखें।)

1. तक्रम् 2. एला 3. इक्षुः 4. तैलम् 5. कलायः

२. एतेषां शब्दानां हिन्दीं लिखत।

1. शर्करा 2. पयोहिमम् 3. अवलेहः 4. मधुरम् 5. घृतम्

३. अधोलिखितशब्दानां संस्कृतं निर्दिशत।

क. बिस्किट ख. सुपारी ग. दधि घ. पोहा ङ. लौंग

४.३.१.३ अध्ययनसामग्रीणां नामानि (अध्ययन सामग्री के नाम)

अध्ययनाय यदा वयं प्रवर्तामहे तदा अस्माभिः संस्कृतसम्बद्धसामग्र्याः संस्कृतेन अवश्यं नामानि ज्ञेयानि एव। तदा एव वयं संस्कृतेन सुष्ठुरीत्या व्यवहारे प्रवृत्ताः भवितुम् अर्हामः।

(अध्ययन के लिए जब हम प्रयत्न करते हैं तब हमें संस्कृत सम्बद्ध सामग्री के संस्कृत में उनके नाम अवश्य जानने चाहिए। जब हम संस्कृत में अच्छी तरह व्यवहार करने में प्रवृत्त होते हैं, तो इसकी आवश्यकता होती है।)

1. लेखनी – पेन, कलम
2. कर्गदः – कागज
3. समपत्रम् – पोस्टकार्ड
4. पिहितपत्रम् – लिफाफा
5. पञ्जिका – रजिस्टर
6. निर्यासः – गोंद
7. दंशी – चिमटा
8. चिटिका – टिकिट
9. रन्ध्रिका – पंचिंग मशीन
10. सञ्चिका – फाइल
11. योजनी – स्टेपलर
12. अङ्कनी – पेन्सिल

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

13. मुद्रा – मोहर
14. घर्षकः – रबर
15. प्राप्तिपत्रम् – रसीद
16. गणकम् – कैलक्युलेटर
17. संगणकम् – कम्प्यूटर
18. स्मृतिशलाका – पेन ड्राईव
19. मापिका - स्केलपट्टी

४.३.१.४ वस्त्राणां नामानि (वस्त्रों के नाम)

सामान्यरूपेण संस्कृतेन व्यवहारं कर्तुं यदा वयं प्रवृत्ताः भवामः तदा वस्त्राणां संस्कृतनाम्नां ज्ञानं सुतराम् अपेक्षितं भवति। तदर्थम् अत्र अस्माभिः वस्त्राणां सूची संस्कृतेन हिन्द्या च समुपलिख्यते येन सहजतया छात्राः संस्कृतेन व्यवहारे दाक्ष्यं लब्धुं शक्नुयुः।

(सामान्य रूप से संस्कृत व्यवहार करने के लिए जब हम प्रवृत्त होते हैं तब वस्त्रों के संस्कृत नाम का ज्ञान बहुत अपेक्षित हो जाता है। इसलिए यहाँ हम वस्त्रों की सूची संस्कृत और हिन्दी में उपलब्ध कराते हैं, जिससे छात्र सहजता से संस्कृत में व्यवहार करने में समर्थ हो सकेंगे।)

वस्त्राणि (पुरुषाणाम्) (वस्त्र – पुरुषों के)

1. धौतवस्त्रम् – धोती
2. उरुकम् - पेन्ट
2. अर्धोरुकम् – चड्डी
4. युतकम् – शर्ट/कमीज
5. करांशुकम् – कुर्ता
6. पादांशुकम् – पायजामा
7. चित्रवेष्टिः – लुंगी
8. अन्तर्युतकम् – गंजी (बनियान)

महिलानाम् (महिलाओं के)

1. शाटिका – साड़ी
2. कञ्चुकः - चोली
2. चोलः – ब्लाऊज
4. निचोलः – स्कर्ट
5. अर्धनिचोलः – फ्रॉक
6. अञ्चलः – पल्ला

समानानि वस्त्राणि (समान वस्त्र)

1. करवस्त्रम् – रूमाल
2. प्रोञ्छः – तौलिया (टॉवेल)
3. कटिवस्त्रम् – अण्डरवियर
4. पादकोशः - मोजे

उष्णवस्त्राणि (गरम वस्त्र)

1. राङ्कवम् – शाल
2. कम्बलः – कंबल
3. तूलिका – रजाई
4. स्वेदकम् – स्वेटर
5. उर्णिका – मफलर
6. शिरस्त्रम् - टोपी

वाक्यानि वस्त्राणां नाम्नां प्रयोगपूर्वकं निर्मीयन्ते।

(वाक्यों को वस्त्रों के नाम के प्रयोग के साथ लिखते हैं।)

1. गणेशः धौतवस्त्रं धरति। (गणेश धौतवस्त्र धारण करता है।)
2. सः वृद्धः करांशुकं धरति। (वह वृद्ध कुर्ता धारण करता है।)
3. कर्मकरः चित्रवेष्टिं प्रक्षालयति। (कर्मकर लुंगी को धोता है।)
4. बालः अन्तर्युतके भ्रमति । (बालक बनियान में घूमता है।)

5. महिला लज्जया अञ्चलं करोति। (महिला लज्जा से आंचल करती है।)
6. ज्येष्ठः शिरस्त्रं धारति। (बड़ा पगड़ी धारण करता है।)

४.३.१.५ अवशिष्टागमे गृहसम्बद्धवस्तूनि (अवशिष्ट घरेलू वस्तुओं के नाम)

यद्यपि विश्वेऽस्मिन् संस्कृतसम्बद्धा सामग्री एव सर्वाधिका वर्तते सर्वासु भाषासु संस्कृतस्य एव प्रभावः वर्तते इति श्रूयते सर्वासु भाषासु प्राचीना अपि इयमेव संस्कृतभाषा। अतः अमरकोषादि-अनेके ग्रन्थाः कोशपदवाच्यत्वेन संस्कृतशब्दसामग्र्याः विपुलतां प्रकटीकुर्वन्ति। किन्तु अत्र समेषां शब्दानां नामग्रहणमात्रेण उपस्थापनं कष्टाय भवेत् इति मनसि निधाय छात्राणां कृते येषां शब्दानाम् आरम्भिक स्तरे आवश्यकता भवति, ते अत्र लिखिताः। येन छात्राः सहजतया संस्कृतेन व्यवहारसामर्थ्यं प्राप्नुयुः –

(यद्यपि विश्व में संस्कृत सम्बद्ध सामग्री सर्वाधिका है। सभी भाषाओं में संस्कृत का प्रभाव है ऐसा सुना जाता है और संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा है। अमरकोषादि अनेक ग्रन्थ कोश पद शब्द से संस्कृत शब्द सामग्री की विपुलता को द्योतित करते हैं। किन्तु यहाँ सभी शब्दों के नाम ग्रहण मात्र से उपस्थापन कष्टकर है, इसी कारण छात्रों के हित को मन में धारण करके आरम्भिक अवस्थाओं में जिन शब्दों की आवश्यकता होती है, जिनसे छात्र सहजता से संस्कृत व्यवहार कर सकेंगे, उन्हें यहाँ लिखा गया है –)

गृहवस्तूनि (गृह वस्तुएं)

1. गवाक्षः – खिड़की
2. अट्टः – अटारी
3. आलिन्दः – वराँडा
4. अर्गला – सांकल
5. सोपानम् – सीढ़ी
6. मार्जनी – झाडू
7. कंकतम् – कंघा
8. आसन्दः – कुर्सी
9. कटः – चटाई
10. चमसः – चमचा
11. स्थालिका – थाली
12. कंसः – लोटा
13. चषकः – गिलास
14. कलशः – लोटा
15. पर्यंकः – पलंग
16. पेटिका – छोटी पेटी
17. उपधानम् - तकिया
18. तल्पः – गद्दा
19. दर्पणः – दर्पण
20. दन्तफेनः – मंजन
21. फेनकम् – साबुन
22. द्रोणी – बाल्टी
23. कूर्चः – ब्रश
24. प्रकोष्ठः – खोली/कमरा
25. कूपी – शीशी
26. स्यूतः – बैग
27. उत्पीठिका – टेबल
28. दीपः – दिया
29. दंडदीपः – ट्यूबलाईट
30. करदीपिका – टार्च
31. करण्डकः – डब्बा
32. दूरवाणी – टेलीफोन
33. व्यजनम् – पंखा
34. नागदन्तः – खूँटी

35. अवलम्बकः – हैंगर | 36. समीकरः - इस्त्री
37. दोला – झूला | 38. शीतकम् – फ्रिज

बोधप्रश्नाः 3

१. अधोलिखितशब्दान् संयोज्य वाक्यानि रचयत। (अधोलिखित शब्दों को जोड़कर वाक्यों की रचना करें।

क. आलिन्दः ख. सोपानम् ग. कटः घ. तल्पः ङ. द्रोणी

च. शीतकम् छ. स्यूतः

२. एतेषां शब्दानां हिन्दीं लिखत। (इन शब्दों की हिन्दी लिखें।)

1. दण्डदीपः 2. करदीपः 3. समीकरः 4. दर्पण 5. चमसः

३. अधोलिखितशब्दान् संस्कृतेन लिखत। (अधोलिखित शब्दों को संस्कृत में लिखें।)

क. लोटा ख. मंजन ग. कुर्सी घ. हैंगर ङ. पलंग च. डब्बा

४.३.२ सम्बन्धवाचकशब्दावली (सम्बन्ध बताने वाले शब्द)

संस्कृतेन व्यवहारसंसाधनाय सम्बन्धवाचकशब्दानां महती आवश्यकता भवति सम्बन्धवाचकशब्दानां व्यवहारः महान् भवति यतः सामाजिकः प्राणी मानवः भवति सः निरन्तरं सम्बन्धवाचकशब्दानां बलेनैव स्वीयं सर्वं संसाधयति। तेन व्यवहारः सहजतया भविष्यति –

(संस्कृत में व्यवहार करने के लिए सम्बन्धवाचक शब्दों की बहुत आवश्यकता होती है। सम्बन्धवाचक शब्दों का व्यवहार बहुत ही अपेक्षित है। मानव सामाजिक प्राणी है, वह निरन्तर सम्बन्धवाचक शब्दों के अधिकाधिक प्रयोग से अपने कार्यों को साधता है। इससे उसका व्यवहार सहजता से होता है –)

सम्बन्धाः (सम्बन्ध)

1. मनुष्यः – मनुष्य
2. पुरुषः – पुरुष
3. युवकः – तरुण
4. युवती – तरुणी
5. पिता/जनकः – पिता
6. माता – माँ
7. पितामहः - दादा
8. पितामही – दादी
9. मातामहः – नाना
10. मातामही - नानी
11. पितृव्यः – चाचा
12. पितृव्या – चाची
13. भ्राता – भाई
14. भगिनी – बहन
15. अग्रजः – बड़ा भाई
16. अग्रजा – बड़ी बहन
17. अनुजः – छोटा भाई
18. अनुजा – छोटी बहन
19. पतिः – पति
20. पत्नी – पत्नी
21. दम्पती – पति पत्नी
22. विधवा – विधवा
23. सधवा – सौभाग्यवती
24. अपत्यम् – सन्तति

25. बालः – बालक
26. बालिका – कन्या
27. पुत्रः – बेटा
28. पुत्री – बेटी
29. पौत्रः – पोता
30. पौत्री – पोती
31. दौहित्रः – नाती
32. दौहित्री – नातिन
33. श्वशुरः – ससुर
34. श्वश्रूः – सास
35. स्नुषा – पुत्री
36. श्यालः - साला
37. मातुलः – मामा
38. मातुलानी – मामी
39. भ्रातृजः – भतीजा
40. भ्रातृजा – भतीजी
41. प्रजावती – भाभी
42. देवरः – देवर
43. ननान्दा – ननद
44. मातृष्वसा – मौसी
45. जामाता – दामाद
46. मित्रम् – मित्र
47. सखी – सहेली
48. शैशवम् – शिशुकाल/बालपन
49. यौवनम् – तारुण्य
50. वार्धक्यम् - बुढ़ापा

इमे सर्वेऽपि सम्बन्धवाचकाः शब्दाः सन्ति येषां प्रयोगः न केवलं समाजस्य दृष्ट्या अपितु छात्राणां स्वीय व्यवहारे दृश्यते एव। एतानि वाक्यानि पठित्वा अन्यानि वाक्यानि लेखितुं वक्तुं च अभ्यासं कुर्वन्तु।

(यह सभी सम्बन्ध वाचक शब्द हैं, जिनके प्रयोग न केवल समाज की दृष्टि से अपितु छात्रों के अपने व्यवहार के लिए भी बहुत आवश्यक है। इन वाक्यों को पढ़कर अन्य वाक्यों को लिखने का अभ्यास छात्र कर सकते हैं।)

1. दम्पती गच्छतः। (पति-पत्नी जाते हैं।)
2. दौहित्री मातामहं नमति। (नातिन नानी को प्रणाम करते हैं।)
3. जामाता पुत्रीं नयति। (जामाता पुत्री को ले जाता है।)
4. देवरः सर्वं भ्रातृजायां ज्ञापयति। (देवर सब कुछ भाभी को समझाता है।)

४.३.३ शरीरावयवनामावली (शरीर के अवयवों के नाम)

शरीरावयवनाम्ना ज्ञानबलेनैव सर्वविधव्यवहारस्य सामर्थ्यम् अस्मासु समुत्पद्यते अस्माभिः ज्ञायते एव। संस्कृतेन सरलतया सहजतया बोधगम्यरूपेण च व्यवहारं कर्तुं शरीरावयवनामानि संस्कृतेन अवश्यं ज्ञेयानि एवम्। यद्यपि बाहुल्येन सर्वैरपि अस्माभिः अस्माकं जीवने सर्वशब्दानां प्रयोगः क्रियते एव। किन्तु शरीराङ्गानां प्रयोगदृष्ट्या अस्माभिः किञ्चिदिव अस्माकं एकं-एकं स्थानकं संस्कृतेन ज्ञातव्यं भवति एव। तदर्थं महान् अस्माभिः श्रमः विधातव्यः भवति । एतद् मनसि निधाय एव संस्कृतज्ञैः अयं विषयः छात्राणां हितकामनया सुचिन्तितः वर्तते। यतः कः शब्दः शरीरस्य कस्मै अंगाय प्रयुज्यते किमंगं संस्कृते किं कथ्यते इति ज्ञानं बहुकष्टेन अस्माकं जायते। एतद् कष्टनिवारणदिशा शरीराङ्गानां नामानि सुतरां ज्ञेयानि एव। तदाश्रित्य एव अत्र शरीराङ्गानां नामानि अस्माभिः आदौ स्मर्यन्ते । तदनु तदाधारेण अस्माभिः वाक्यरचना इत्यादिकं किञ्चिद् विधाय अभ्यासपूर्वकं वयं एतान् शब्दान् व्यवहर्तुं समर्था भवेम।

प्रथम खण्डः

(शरीरावयव नाम के ज्ञान के बल से सर्वविध व्यवहार को सम्पादित किया जा सकता है। संस्कृत से सरल सहज और बोधगम्य रूप से व्यवहार करने के लिए शरीरावयवों के नाम संस्कृत में जानना आवश्यक है। यद्यपि बाहुल्य से सभी के द्वारा शब्द व्यवहार का प्रयोग किया जाता है। किन्तु शरीर अंगों की दृष्टि से हमें एक-एक स्थान का ज्ञान संस्कृत में होना आवश्यक है। जिसके लिए श्रम अपेक्षित है। ऐसा मन में धारण करके संस्कृतज्ञों के द्वारा छात्रों के हित की कामना से यह विषय सुचिन्तित किया गया है। कि कौनसे शब्द शरीर के लिए हैं ? किसको संस्कृत में क्या कहा जाता है ? यह ज्ञान बहुत कष्टकर है। इस कष्ट को निवारण करने के लिए शरीरावयवों के नाम जानना बहुत ही आवश्यक है। इसे धारण करके शरीरावयवों के नाम यहाँ पर पहले उच्चारित कर रहे हैं। उसके बाद वाक्य रचना इत्यादि का अभ्यास करके, हम इन शब्दों को व्यवहार में ला सकते हैं।)

	संस्कृत		हिन्दी
1.	हृदयम् (नपुं.)	-	हृदय
2.	जघनम् (नपुं.)	-	स्त्रियों का कटि पुरोभाग(पेड़ू)
3.	अस्थिपञ्जरः (पुं.)	-	हड्डियों का ढाँचा
4.	अस्थि, कीकसम् (नपुं.)	-	हड्डी
5.	मज्जा (स्त्री.)	-	हड्डी के अन्दर की चर्बी
6.	करतलम् (नपुं.), प्रहस्तः (पुं.)	-	हथेली
7.	हस्तः/करः (पुं.)	-	हाथ
8.	इषिका, दूषिका (स्त्री.), अक्षिमलम् (नपुं.)	-	आँख का कीचड़
9.	कनीनिका (स्त्री.), नेत्रगोलकम् (नपुं.)	-	आँख की पुतली
10.	अपाङ्गः (पुं.)	-	आँख का कोना
11.	अङ्गुलिः, करशाखा (स्त्री.)	-	अँगुली
12.	अङ्गुष्ठः (पुं.)	-	अंगूठा
13.	तर्जनी, प्रदेशिनी (स्त्री.)	-	अँगूठे के पास की अँगुली
14.	करणम्, इन्द्रियम् (नपुं.)	-	इन्द्रिय
15.	ओष्ठः (पुं.)	-	ओठ
16.	पार्ष्णिः (पुं./स्त्री.), एड्डुकम् (नपुं.)	-	एड़ी
17.	कण्ठः (पुं.)	-	कंठ
18.	स्कन्धः, अंसः (पुं.)	-	कन्धा
19.	जत्रु (नपुं.)	-	कन्धे की हड्डी
20.	कटिः, श्रोणिः (स्त्री.)	-	कमर
21.	कङ्कालः (पुं.)	-	कंकाल
22.	हनुः (पुं.)/हनू (स्त्री.), गण्डस्थलम् (नपुं.)	–	कनपटी,गाल,कपोल
23.	मणिबन्धः (पुं.), कलाचिका (स्त्री.)	-	कलाई
24.	वृक्कम्/अग्रमांसम्, बुक्कः (पुं.)	-	कलेजा
25.	कक्षान्तरम्/कक्षः, बाहुमूलम् (नपुं.)	-	काँख
26.	कर्णः (पुं.), श्रोत्रम्, श्रवणम् (नपुं.)	-	कान

27.	वेष्टनम् (नपुं.)/कर्णशष्कुली (स्त्री.)	-	कान का पर्दा
28.	कर्णकिट्टम् (नपुं.)	-	कान का मैल
29.	कटिप्रोक्षः, कटिप्रोथः (पुं.)	-	कूला
30.	कुब्जः (पुं.)	-	कूबड़
31.	कफोणिः (स्त्री.)/कूर्परः (पुं.)	-	कोहनी
32.	त्वच् (स्त्री.)	-	खाल
33.	रक्तम्/रुधिरम्/शोणितम् (नपुं.)	-	खून
34.	कपालः, मस्तकम् (नपुं.)	-	खोपड़ी
35.	ग्रीवा (स्त्री.)/शिरोधरः (पुं.)	-	गर्दन
36.	कण्ठः/गलः (पुं.)	-	गला
37.	खल्वाटः (पुं.)	-	गंजा पुरूष
38.	खल्वाटा (स्त्री.)	-	गंजी स्त्री
39.	ग्रन्थिः (स्त्री.)	-	ग्रन्थि (गाँठ)
40.	अङ्गम् (नपुं.), अवयवः, प्रतीकः (पुं.)	-	अंग
41.	अञ्जलिः (स्त्री.)	-	अँजली
42.	वृषणः, मुष्कः (पुं.)	-	अण्डकोष
43.	कङ्कालः (पुं.)	-	अस्थिपञ्जर
44.	नेत्रम्, लोचनम्, नयनम्, चक्षुः (नपुं.)	-	आँख
45.	अन्त्रम् (नपुं.)	-	आँत
46.	अश्रु, अस्रम्, नेत्रवाष्पम् (नपुं.)	-	आँसू
47.	कपोलः, गण्डः (पुं.)	-	गाल
48.	गुदम्/मलद्वारम्/अपानम् (नपुं.)	-	गुदा
49.	वृक्कः (पुं.)	-	गुर्दा
50.	मेदः (पुं.), वसा/वपा (स्त्री.)	-	चर्बी
51.	नखक्षतम् (नपुं.)	-	चिकोटी
52.	अङ्गुलिध्वनिः (स्त्री.)	-	चुटकी
53.	चुलूकः (पुं.)	-	चुल्लू
54.	नितम्बः (पुं.), स्फिक् (स्त्री.)	-	चूतड़
55.	शिखा, चूडा (स्त्री.)	-	चोटी
56.	वक्षस्थलम् (नपुं.), वक्षः(नपुं.)	-	छाती
57.	अनामिका (स्त्री.)	-	छोटी अँगुली के पास की अँगुली
58.	जटा, सटा (स्त्री.)	-	जटा
59.	सृक्कणी (नपुं.)	-	जबड़ा
60.	जङ्घा (स्त्री.), जघनम् (नपुं.)	-	स्त्री कटिपुरोभाग
61.	यकृतम्/कालेयम् (नपुं.)	-	जिगर
62.	क्रोडम् (नपुं.), अङ्कः/उत्सङ्गः (पुं.)	-	गोद

63.	जानु (नपुं.)	-	घुटना
64.	सक्थि (नपुं.)	-	घुटने के ऊपर का हिस्सा
65.	अलकः/चूर्णकुन्तलः (पुं.)	-	घुंघराले बाल
66.	चपेटः (पुं.), चर्पटिका /चपेटा (स्त्री.)	-	चपत (झापड़)
67.	चरणः (पुं.)	-	चरण (पैर)
68.	जिह्वा/रसना (स्त्री.)	-	जीभ
69.	काकपक्षः/शिखण्डकः (पुं.)	-	जुल्फ
70.	वेणिः (स्त्री.)	-	जूड़ा
71.	चिबुकम्/हनुः (नपुं.)	-	टुड्डी
72.	भृकुटिः (स्त्री.)/भृकुटी /भ्रुकुटि /भ्रुकुटी	-	टेढ़ी भौं
73.	आसिकम् (नपुं.)	-	टुड्डी के बीच का गड्ढा
74.	तलः (पुं.), पादतलम् (नपुं.)	-	तलवा
75.	करतलध्वनिः, तालः (पुं.)	-	ताली
76.	निष्ठ्यूतिः (स्त्री.)	-	थूक (खखार)
77.	दंष्ट्रा (स्त्री.)	-	दाढ़
78.	श्मश्रु/कूर्चम् (नपुं.), दाढिका (स्त्री.)	-	दाढ़ी
79.	दन्तः, रदनः, दशनः (पुं.)	-	दाँत
80.	हृदयम् (नपुं.)	-	दिल
81.	मस्तिष्कम् (नपुं.)	-	दिमाग
82.	तालु, काकुदम् (नपुं.)	-	तालु
83.	मस्तकावलिः, मस्तकरेखा (स्त्री.)	-	त्यौरी
84.	तुन्दम् (नपुं.)	-	तोंद
85.	नाभिः (स्त्री.)	-	तोंद के बीच छिद्र
86.	चपेटा (स्त्री.), चर्पटः (पुं.)	-	थप्पड़
87.	मानसिकः/बौद्धिकः (पुं.)	-	दिमागी
88.	मृदु (वि.), कोमलम् (नपुं.)	-	नरम
89.	रक्तवाहिनी, स्नायुः, धमनी (स्त्री.)	-	नस
90.	नेत्रम् (नपुं.)	-	नेत्र
91.	पर्शुका (स्त्री.)	-	पंजड़ी
92.	पञ्चाङ्गुलम् (नपुं.)	-	पंजा
93.	नेत्ररोमन्/पक्ष्म (नपुं.)	-	पलक
94.	पार्श्वास्थि (नपुं.)	-	पसली की हड्डी
95.	स्रवणम् (नपुं.), स्वेदः (पुं.)	-	पसीना
96.	पीठिका (स्त्री.)	-	पिण्डली
97.	पृष्ठम् (नपुं.), पृष्ठदेशः (पुं.)	-	पीठ
98.	उदरम्, जठरम् (नपुं.)	-	पेट

99.	पादः/चरणः/अङ्घ्रिः (पुं.)	-	पैर
100.	नखः, करजः (पुं.), नखम् (नपुं.)	-	नाखून
101.	नासिका (स्त्री.), घ्राणम् (नपुं.)	-	नाक
102.	नासारन्ध्रम्/नासिक्यम् (नपुं.)	-	नाक के छेद
103.	स्नायुः (पुं.), नाडी, धमनी (स्त्री.)	-	नाड़ी
104.	अधरः/अधरोष्ठः (पुं.)	-	नीचे का ओष्ठ
105.	गुल्फः (पुं.)	-	पैर का टखना
106.	केशः/कचः (पुं.), शिरोरुहः (वि.)	-	बाल
107.	बाहुः, भुजः (पुं.), भुजा (स्त्री.)	-	बाँह
108.	मध्यमा (स्त्री.)	-	बीच की अँगुली
109.	बुद्धिः, प्रज्ञा, मनीषा, धीः (स्त्री.)	-	बुद्धि
110.	गुल्मः (पुं.)	-	प्लीहा
111.	फुफ्फुसम् (नपुं.)	-	फेफड़ा
112.	मूत्रपुटम् (नपुं.)	-	बस्ति
113.	भ्रूः (स्त्री.)	-	भौंह
114.	कूर्चम् (नपुं.)	-	भौंह का मध्य भाग
115.	बाहुः (पुं.)	-	भुजा
116.	मलम्, पुरीषम् (नपुं.)	-	मल
117.	मांसम्/पिशितम्/आमिषम् (नपुं.)	-	माँस
118.	मांसपेशिका (स्त्री.)	-	माँसपेशी
119.	मुखम्, आननम्, वक्त्रम् (नपुं.)	-	मुख
120.	मुष्टिका/मुष्टिः (स्त्री.)	-	मुट्ठी
121.	मुच्छः/गुम्फः (पुं.), गण्डलोमन् (नपुं.)	-	मूँछ
122.	वस्तिः (पुं., स्त्री.)	-	मूत्राशय
123.	मनः, चित्तम्, मानसम् (नपुं.)	-	मन
124.	काकुदम्, दन्तमूलम् (नपुं.)	-	मसूड़ा
125.	ललाटम्, मस्तकम्	-	माथा
126.	सीमन्तः (पुं.)	-	माँग
127.	मूत्रम् (नपुं.), प्रस्रावः (पुं.)	-	मूत्र
128.	योनिः (स्त्री), भगः (पुं.)	-	योनि
129.	रजः (नपुं.)	-	रज
130.	वीर्यम्/शुक्रम् (नपुं.)	-	वीर्य
131.	गात्रम्, शरीरम् (नपुं.), देहः (पुं.)	-	शरीर
132.	क्लोमन् (नपुं.)	-	शरीर का तिल
133.	पलितम् (नपुं.), श्वेतकचः (पुं.)	-	सफेद बाल
134.	कनिष्ठिका (स्त्री.)	-	सबसे छोटी अँगुली

135. कशेरुका (स्त्री.), पृष्ठास्थि (नपुं.) - रीढ़
136. रोमः (पुं.) - रोएं
137. लाला, स्यन्दिनी (स्त्री.) - लार
138. लिङ्गम् (नपुं.), शिशनः, मेढ्रः (पुं.) - लिंग
139. मस्तकः (पुं.), शीर्षम्, शिरः (नपुं.) - सिर
140. पयोधरः, स्तनः, उरोजः (पुं.) - स्तन
141. चूचुकम्, कुचाग्रम् (नपुं.), कुचः (पुं.) - स्तन का अग्रभाग

एतेषां शरीराङ्गानाम् आधारेण वयं बहून् प्रश्नान् निर्मातुं शक्नुमः। यथा – (इन शरीरावयवों के आधार पर हम बहुत सारे प्रश्नों का निर्माण कर सकते हैं। जैसे-)

अधोलिखितशब्दानाम् आधारेण अभ्यासं कुर्मः। एकं अङ्गं पश्यामः, तस्य संस्कृतं प्रष्टुं शक्नुमः। एवं कृत्वा बहुविधप्रश्नाः भवितुमर्हन्ति।

(अधोलिखित शब्दों के आधार पर अभ्यास करें। एक अंग को दिखाकर, उसकी संस्कृत पूछ सकते हैं। इस तरह से बहुत सारे प्रश्नों का निर्माण कर सकते हैं।)

४.३.४ व्यवसायवाचकनामावली (व्यवसाय सूचक नाम)

व्यवसायवाचकशब्दानां ज्ञानं सुतराम् अनिवार्यं भवति। यतः सामाजिकः प्रत्येकमपि जनः कस्मिन्नपि व्यवसाये संलग्नो भवति। तदर्थं अत्र अस्मिन् पाठे व्यवसायवाचकशब्दानां ज्ञानम् अनिवार्यम् इति कारणेन व्यवसायवाचकशब्दाः समुपस्थापयन्ते। तदनु तदाधारेण कानिचन वाक्यानि निर्मीयन्ते। तद्वाक्यानि अवलम्ब्य एव च छात्राः विविधाभ्यासान् कर्तुं प्रभविष्यन्ति। येन तेषां ज्ञानलाभाः भवितुमर्हन्ति। तदनु व्यवसायवाचकशब्दानाम् आधारेणैव बहुविधशब्दरचनाः, वाक्यरचनाः, अभ्यासाः च भवितुमर्हन्ति। येन अस्माकं पूर्णज्ञानं भवितुं शक्यते।

(व्यवसाय वाचक शब्दों का ज्ञान बहुत ही अनिवार्य होता है, क्योंकि प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति किसी न किसी व्यवसाय में संलग्न होता है। इसलिए यहाँ इस पाठ में व्यवसाय वाचक शब्दों का ज्ञान अत्यन्त अनिवार्य है, इस कारण से व्यवसाय वाचक शब्दों को उपस्थापित करते हैं। उनके आधार पर कुछ वाक्य निर्मित करते हैं। उन वाक्यों को आधार बनाकर छात्र विविध अभ्यासों को कर सकेंगे, जिससे उनको ज्ञान प्राप्त हो सकता है। उसके बाद व्यवसाय वाचक शब्दों के आधार पर बहुविध शब्द रचना, वाक्य रचना और अभ्यास भी हो सकते हैं, जिनके माध्यम से हमें व्यवसाय वाचक शब्दों का पूर्ण ज्ञान हो सकता है।)

व्यवसायशः पदानि (व्यवसाय से सम्बन्धित पद)

1. कृषकः – किसान
2. गोपालः – ग्वाला
3. शिल्पकारः – कारीगर
4. कुम्भकारः – कुम्हार
5. भारवाहकः – कुली
6. क्रेता – ग्राहक
7. विक्रेता – विक्रेता
8. परिचारकः – चपरासी
9. द्वारपालः – चौकीदार
10. स्वर्णकारः – सुनार
11. चिकित्सकः – वैद्य (डॉक्टर)
12. पत्रवाहकः – पोस्टमेन

13. सौचिकः – दर्जी
14. धात्री – परिचारिका (नर्स)
15. वणिक् – व्यापारी
16. भृत्यः – नौकर
17. रजकः – धोबी
18. नापितः – नाई
19. आरक्षकः – पुलिस
20. चित्रग्राहकः – फोटोग्राफर
21. तक्षकः – बढ़ई
22. मालाकारः – माली
23. लिपिकः – मुनीम (क्लर्क)
24. चर्मकारः – मोची
25. श्रमिकः – मजदूर
26. पाचकः – रसोईया
27. लौहकारः – लुहार
28. अधिवक्ता – वकील
29. भिक्षुकः – भिखारी
30. अर्चकः – पुजारी
31. क्रीडकः – खिलाड़ी
32. विज्ञानी – वैज्ञानिक
33. अनुबन्धकः – ठेकेदार

सामान्यरूपेण हि अत्र केचन शब्दाः समुद्भाविताः वर्तन्ते । अन्ये बहव: शब्दा: इतर-इतरग्रन्थेषु अस्माभिः अवलोकयितुं शक्यन्ते। कोशाः द्रष्टुं पठितुं च शक्यन्ते। अत्र सामान्यरूपेण यथा ज्ञानं भवेत् व्यवहारे संस्कृतदार्ढ्यं च समुत्पद्येत । तदर्थं केचन शब्दाः संगृहीताः क्रमेण ते पठिताः च सन्ति ।

(सामान्य रूप से यहाँ पर कुछ शब्द लिखे गये हैं, इनके अतिरिक्त शब्द अन्य-अन्य ग्रन्थों में हमारे द्वारा देखे जा सकते हैं। कोश को देखा और पढ़ा जा सकता है। यहाँ सामान्य रूप से यथास्थान व्यवहार हो सके, संस्कृत व्यवहार में दृढ़ता आये। इसलिए कुछ शब्द संगृहीत हैं, उन्हे क्रम से पढ़े।)

४.४ अभ्यासः

अभ्यासेनैव विषयस्य दृढता जायते अभ्यासं विना न कोऽपि विषयः दृढतां धारयति। अस्मिन् पाठे पठितानां प्रत्येकं शब्दानां पौनःपुन्येन अत्र अभ्यासः विधीयते।

(अभ्यास के बल से ही विषय की दृढ़ता होती है, अभ्यास के बिना कोई भी विषय दृढ़ता को प्राप्त नहीं होता है। इसलिए इस पाठ में शब्दों का पुनः पुनः अभ्यास किया गया है।)

(अधोलिखिता अभ्यासाः)

1. गृहोपकरणवस्तूनां संस्कृतेन नामानि लिखत। (गृहोपकरण वस्तुओं के संस्कृत में नाम लिखें।)

   1. घटी –
   2. मूर्ति –
   3. भोग –
   4. घी –
   5. तेल –
   6. प्याज –

7. बिस्किट –
8. चिमटा –
9. मापिका –
10. धोती –

2. अधोलिखितशब्दानां हिन्दीं ज्ञापयत। (अधोलिखित शब्दों की हिन्दी बतायें।)

1. नाभिः	2. चपेटा -
3. मानसिकः-	4. कोमलम्-
5. रक्तवाहिनी-	6. विक्रेता –
7. स्वर्णकारः –	8. परिचारकः –
9. द्वारपालः –	10. चिकित्सकः –
11. पितृव्यः –	12. पितृव्या –
13. भ्राता –	14. भगिनी –
15. अग्रजः –	16. अग्रजा –
17. अनुजः –	18. अनुजा –
19. पतिः –	20. पत्नी –

3. अधोलिखितशब्दान् उपयुज्य वाक्यानि लिखत। (अधोलिखित शब्दों का उपयोग कर वाक्यों को लिखें।)

1. कम्बलः, 2. पतिः 3. दीपः 4. पुत्रः, 5. भार्या, 6. चपेटा , 7. चिकित्सकः 8. करवस्त्रम्, 9. द्वारपालः 10. पितामही

4. अधोलिखितशब्दान् यथार्थं योजयत। (अधोलिखित शब्दों को यथार्थ रूप में संस्कृत-हिन्दी में योजित करें।)

संस्कृतम्	**हिन्दी**
1. हनुः	1. मिर्ची
2. पौत्रः	2. घुटना
3. प्रजावती	3. स्वेटर
4. दोला	4. हथेली
5. स्वेदकम्	5. पोता
6. करतलम्	6. वरांदा
7. आलिन्दः	7. तौलिया
8. प्रोञ्छः	8. खून
9. तूलिका	9. पलंग
10. अर्धोरुकम्	10. झूला
11. तेमनम्	11. कनपटी

12.	रक्तम्	12.	रजाई
13.	पर्यङ्क	13.	भाजी
14.	मरीचिका	14.	चड्डी
15.	जानु	15.	कढ़ी

४.५ सारांशः (Summary)

अस्मिन् पाठे वयं गृहोपकरणानां, सम्बन्धवाचकशब्दानां, शरीरावयवानां, व्यवसायवाचकशब्दानां च संस्कृतशब्दाः के भवन्ति ? इति सम्यक्तया ज्ञातवन्तः। अनेन पाठेन अस्माकं नित्य गृहोपयोगि वस्तूनां कथं संस्कृतेन प्रयोगः करणीयः इति सुष्ठुतया ज्ञातो भविष्यति । एतस्य पाठस्य आधारेण न केवलं छात्राः सर्वशब्दानां संस्कृतम् अवगन्तुं शक्ष्यन्ति । अपितु वाक्यप्रयोगादीनि कर्तुमपि प्रभविष्यन्ति । तेषु प्रयोगकौशलमपि समुत्पन्नं भविष्यति। न केवलं प्रयोगकौशलं समुत्पन्नं भविष्यति अपितु ते भिन्न-भिन्न – गृहोपकरणवस्तूनां नामग्रहणपूर्वकं वाक्यानि सुष्ठुरीत्या रचयितुं शक्ष्यन्ति। सम्बन्धवाचकशब्दान् अपितु ते ज्ञातुं प्रभविष्यन्ति। तेषां न केवलं सम्बन्धवाचकशब्दानां ज्ञानं समुत्पत्स्यते, अपितु शरीरावयवाङ्गानामपि प्रयोगपूर्वकं व्यवहारं कर्तुं शक्ष्यन्ति । अस्मिन् समाजे आधुनिककाले शब्दव्यवहारस्य महती आवश्यकता अस्ति । यतः वयम् अवलोकयामः सर्वत्रापि शब्ददारिद्र्यम् इदानीं दृश्यमानमस्ति । किन्तु तत्र संस्कृतं शब्ददिशा बहुवैपुल्यं धारयति । संस्कृते अनेकानां शब्दानाम् अस्ति विपुलता इति वयं सर्वेऽपि जानीमहे । तदर्थं अत्र अनेन पाठमाध्यमेन न केवलं अस्माकं विकासः भविष्यति अपितु जनसामान्यस्य संस्कृतव्यवहारे व्यवहारपथगामिनी रूचि: भविष्यति दृढो विश्वास:।

(इस पाठ में हम गृहोपकरण नाम, सम्बन्धवाचक शब्द, शरीरावयव और व्यवसाय वाचक शब्दों के संस्कृत शब्दों को अच्छी तरह से समझा है। इस पाठ में हमने गृह उपयोगी वस्तुओं का कैसे संस्कृत में प्रयोग किया जायें, उनका अच्छी तरह ज्ञान कैसे प्राप्त हो। इस पाठ के अध्ययन से छात्र केवल संस्कृत शब्दों को संस्कृत में ही समझने में समर्थ नहीं होंगे अपितु वाक्य प्रयोग करने में भी समर्थ हो सकेंगे। उनके प्रयोग कौशल भी उत्पन्न होगा। न केवल प्रयोग कौशल ही उत्पन्न होगा अपितु वे भिन्न-भिन्न गृहोपकरण वस्तुओं का नाम लेकर वाक्यों को अच्छी तरह लिख सकेंगे, समझ सकेंगे, बोल सकेंगे। सम्बन्ध वाचक शब्दों को भी जानेंगे। न केवल सम्बन्ध वाचक शब्दों को जान सकेंगे, अपितु शरीरावयव वाक्यों का भी प्रयोग सही से अपने व्यवहार में ला सकेंगे। इस समाज में आधुनिक काल में शब्द व्यवहार की बहुत ही आवश्यकता है क्योंकि सभी जगह शब्दों का दारिद्र्यं दिखाई दे रहा है। परन्तु वहाँ संस्कृत शब्द दिशा तो बहुत विपुलता को धारण करती है। संस्कृत में अनेक शब्द हैं, संस्कृत में विपुलता है, यह हम जानते ही हैं। उसके लिए इस पाठ के माध्यम से न केवल हमारा विकास होगा बल्कि जन सामान्य का संस्कृत व्यवहार में रूचि होगी ,ऐसा हमारा विश्वास है।)

४.६ बोधप्रश्नानाम् उत्तराणि

बोधप्रश्नानाम् उत्तराणि – १

१. 1. अर्चकः मन्दिरे पूजां करोति।

2. भक्तः तिलकं धरति।

3. माता सायङ्काले दीपं ज्वालयति।
4. बालः घण्टिकां वादयति।
5. महिला पुष्पाणि देवाय समर्पयति।

२. 1. आसन 2. भोग 3. माचिस 4. अगरबत्ती

३. 1. रक्षासूत्रम् 2. पुष्पम् 3. श्रीः 4. अग्निशलाका/ अग्निपेटिका

बोधप्रश्नानाम् उत्तराणि – २

१. 1. देवाः तक्रं पिबन्ति। 2. चाये एलां स्थापयित्वा पिबति ।

3. इक्षुः मधुरः भवति। 4. मल्लः तैलं लेपयति ।

5. कलायैः अन्नं सज्जीकरोति ।

२. 1. चीनी 2. आइस्क्रीम 3. अचार 4. मिठाई 5. घी

३. 1. सुपिष्टकम् 2. पूगीफलम् 3. दही 4. पृथुकः 5. लवङ्गम्

बोधप्रश्नानाम् उत्तराणि – ३

१. क. आलिन्दे जनाः शयनं कुर्वन्ति । ख. सोपानेन आरोहणं करोति बालः।

ग. कटे उपविश्य पठति। घ. तल्पे माता शिशुं शाययति ।

ङ. द्रोण्यां जलं वर्तते। च. शीतके शाकं माता स्थापयति ।

छ. स्यूते पुस्तकानि स्थापयित्वा गच्छति।

२. 1. ट्यूबलाईट 2. टार्च 3. इस्त्री 4. शीशा 5. चमचा

३. क. कलशः ख. दन्तफेनः ग. आसन्दः घ. अवलम्बकः

ङ. पर्यङ्कः च. करण्डकः

४.७ सन्दर्भग्रन्थसूची (Bibliography)

- अनुवादरत्नाकरः - डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी – चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, २००१
- बृहद् अनुवाद चन्द्रिका - चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री – मोतीलाल बनारसीदास
- भाषापाक् – जनार्दन हेगडे – संस्कृत भारती, बैंगलुरम्
- शुद्धिकौमुदी – जनार्दन हेगडे – संस्कृत भारती, बैंगलुरम्
- संस्कृतरचना – श्री वामन शिवराम आप्टे - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
- संस्कृत शिक्षण सरणी – आचार्य राम शास्त्री - परिमल पब्लिकेशन दिल्ली

४.८ सहायकोपयोगि पाठ्य सामग्री (Supportive study material)

- अनुवादचन्द्रिका –डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी – चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

गृहोपकरणानि, सम्बन्धवाचकशब्दावली, शरीरावयवनामावली, व्यवसायवाचकनामावली च

- अनुवादरत्नाकरः - डॉ. रमाकान्त त्रिपाठी – चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी, २००१
- बृहद् अनुवाद चन्द्रिका - चक्रधर नौटियाल 'हंस' शास्त्री – मोतीलाल बनारसीदास
- संस्कृतरचना – श्री वामन शिवराम आप्टे - चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी
- संस्कृत शिक्षण सरणी – आचार्य राम शास्त्री - परिमल पब्लिकेशन दिल्ली
- www.ashtadhyayi.com